दादा भगवान परिवार का
जनवरी २०२३
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

मित्रों,

प्लेन में यात्रा की एक छोटी सी घटना याद आ गई। रात की फ्लाइट थी। थोड़ा आराम करने की इच्छा थी। तभी पाँच-छः महीने का एक बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। मेरी तरह शायद दूसरे यात्रियों को भी आराम करने की इच्छा थी। इसलिए बच्चे के रोने से वे थोड़े चिढ़ गए। तभी एक तीन-चार वर्ष का बच्चा उस छोटे बच्चे की माँ के पास आकर बोला, "आन्टी, जब मुझे रोना आता है तब मैं अपने इस फ़ेवरिट खिलौने से खेलता हूँ तो मैं हैपी हो जाता हूँ। आप यह खिलौना अपने बेबी को दे दीजिए तो वह भी हैपी हो जाएगा।"

उस दिन तीन-चार साल के बच्चे ने मानव धर्म का श्रेष्ठ उदाहरण दिया। वह कैसे? यह जानने के लिए इस अंक में दी गई अलग-अलग व्याख्याओं और कहानियों के द्वारा मानव धर्म के बारे में समझते हैं।

- डिम्पल मेहता

क्या आपको ऐसा पसंद है?

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १० अंक : १०
अखंड क्रमांक : ११८
जनवरी २०२३

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

मीठी यादें

यह बात सालों पहले की है। उन दिनों महात्माओं की इतनी भीड़ नहीं हुआ करती थी। इसलिए नीरू माँ के नज़दीक जाने के बहुत चान्स मिलते थे। मुझे मैसेज मिला कि नीरू माँ को एयरपोर्ट पर छोड़ने जाना है। मैं बहुत खुश हो गई। मुझे नीरू माँ के लिए कुछ ले जाने का मन हुआ। सोचा की ऑरेन्ज जूस बनाकर ले जाऊँ। घर पर जिस तरह जूस बनाती थी ठीक वैसे ही बनाया।

जूस में संतरे के छोटे-छोटे बीज रह गए थे। उस समय मुझे यह पता नहीं था कि नीरू माँ की सेहत के लिए चीनी हितकारी नहीं है। संतरे खट्टे थे इसलिए मैंने जूस में थोड़ी चीनी भी डाल दी। काँच की बॉटल में जूस भरकर मैं मेरी मदर के साथ एयरपोर्ट पहुँची।

नीरू माँ की सेवा में जो बहन थीं उन्हें मैंने जूस की बॉटल दी। बहन ने बॉटल को हिलाकर देखा। संतरे के छोटे-छोटे बीज देखकर उन्होंने कहा कि नीरू माँ को यह जूस नहीं दिया जा सकता। यह सुनकर मैंने कुछ कहा नहीं लेकिन मेरा दिल टूट गया। मैं सब काम छोड़कर बहुत भाव से नीरू माँ के लिए जूस बनाकर ले गई थी।

उस समय नीरू माँ मुझसे लगभग चार-पाँच फूट दूर बैठे थे और दूसरे दो-तीन महात्माओं के साथ बातें कर रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि मैं उनके लिए जूस बनाकर लाई हूँ। पाँच-दस मिनिट बाद नीरू माँ ने मुझसे पूछा, "तुम मेरे लिए कुछ लाई हो?" मैंने कहा, "हाँ नीरू माँ, ऑरेन्ज जूस।" तो नीरू माँ ने कहा, "तो दो न।" यह सुनकर मैं बहुत खुश हो गई। मैंने नीरू माँ को ग्लास में ज्यूस भरकर दिया। नीरू माँ ने जूस पीने के बाद पूछा, "और है?" मैं तो गदगद हो गई। बॉटल में जितना जूस था, वे सारा पी गई।

नीरू माँ ने मेरे दिल के भाव पढ़ लिए थे। उनकी सेहत के लिए हितकारी नहीं होने के बावजूद मेरा भाव पूरा करने के लिए उन्होंने पूरा जूस पी लिया। उस दिन उन्होंने पूरी तरह से मेरा दिल जीत लिया!

ज्ञानी कहते हैं...

मानव धर्म यानी, मुझे जिससे दुःख लगता है, वैसा दुःख मैं किसी को न दूँ। यदि कोई मुझे ऐसा दुःख दे तो क्या हो? इसलिए मुझे किसी को ऐसा दुःख नहीं देना है।

मानवता अर्थात् खुद को जो पसंद है वैसा ही व्यवहार औरों के साथ करना।

मानव धर्म का अर्थ है, सामने वाले को सुख दें तो हमें सुख मिलता है।

सच्चा मानवधर्म यही है कि किसी भी जीव को किंचितमात्र दुःख नहीं देना चाहिए। मानवधर्म में टिट फॉर टेट नहीं चलता।

खुद को औरों की जगह पर रखना वही मानव धर्म।

हाय फ्रेन्ड्स, मुझे पहचाना? मैं हूँ थीओ । याद है, मैं आपसे २०२२ में 'छुट्टियों का मज़ा' में मिला था? अब से मैं आपको अपने फ्रेन्ड्स के साथ समय-समय पर, यानी कि बार-बार मिलता रहूँगा। क्यों? क्योंकि मैं अपने फ्रेन्ड्स के साथ डीडीमा जंगल के बाहर नई-नई जगहों पर ट्रैवल करने वाला हूँ। इतना सारा ट्रैवल क्यों? फिट रहने के लिए! याद है ना, फिट रहो, आनंद में रहो! आनंद में तो मैं हमेशा रहता ही हूँ। लेकिन फिट रहने के लिए हम ट्रैवल करेंगे। ट्रैवेलिंग के दौरान किसी इन्सपाइरिंग, यानी कि प्रेरक व्यक्ति के बारे में जानने को मिलेगा वो आपके साथ शेयर करेंगे। तो चलो, पहले हमारा इन्ट्रोडक्शन अर्थात् परिचय करवा दूँ।

मैं हूँ थीओ। मुझे खाने का शौक है। इतना ही नहीं, मैं अपने ग्रुप की विकिपीडिया/डिक्शनरी हूँ। वर्ड्स के "डिनोटेशन" यानी की "अर्थ" समझना मुझे बहुत पसंद है।

यह रिज़ो है, जिसकी लाइफ में दो चीज़ों का ही महत्व है।
१. उसके सस्पेंडर वाले फॉर्मल्स और
२. उसका फोन, जिस पर वह रिसर्च करता है, और नई-नई जगहों पर जाने के लिए टिकिट और होटल बुक करता है। रिज़ो हमारा ग्रुप मैनेजर है।

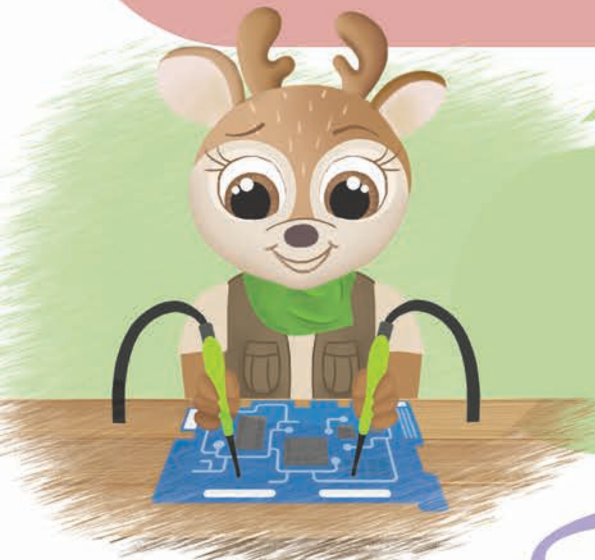

यह है ज़ोइ, जिसे टेक्नॉलाजी और मकैनिक्स में बहुत इन्टरेस्ट है। कौनसी चीज़ कैसे चलती है यह खोजना उसका फेवरिट टाइम है। ज़ोइ हमारे ग्रुप का ब्रेन है।

यह है जिफी। वह जितना हाइट में ऊँचा है उतना ही हार्टिली है। हर एक के बैग में जिफी के लिए टिशू बॉक्स होता ही है! क्योंकि छोटी-छोटी बातों में उसका दिल और आँखें भर आती हैं। कई बार तो रिज़ो को उसके आँसुओं के कारण बरसात का अनुभव हुआ है। जिफी हमारे ग्रुप का हार्ट है।

इस महीने हम वर्जिनिया, यु.एस.ए. की सिटी लाइब्रेरी में आए हैं। यहाँ हमें बॉयोग्राफी की अर्थात् जीवन चारित्र की बुक मिली है, जिसमें हमें हॉवर्ड केली की स्टोरी बहुत ही इन्सपाइरिंग लगी। मुझे लगता है, आपको भी लगेगी।

हॉवर्ड केली

हॉवर्ड केली नामक एक बहुत गरीब लड़का था। स्कूल की फीस भरने के लिए वह अपने फ्री समय में फेरी लगाने का काम करता था। वह घर-घर जाकर स्टोर का सामान बेचता था और उस पर जो कमिशन मिलता था उससे स्कूल की फीस भरता और पुस्तकें खरीदता था।

एक दिन ऐसे ही सामान बेचते हुए दोपहर हो गई। तेज़ धूप थी। केली के बैग में थोड़ी-बहुत चीज़ें ही रह गई थीं। लेकिन न जाने क्यों उस दिन उतनी सी चीज़ों को भी कोई खरीद नहीं रहा था। भूख तथा प्यास के कारण वह बेहाल हो गया था। उसने एक घर का दरवाजा खटखटाया। एक यंग लड़की ने दरवाजा खोला।

'मैम! मेरे पास कुछ सामान है। आप खरीदोगी?' उसकी आवाज़ में थकान लग रही थी।

'हाँ, हाँ! क्यों नहीं?' लड़की इस तरह बोली मानों उसे केली की परिस्थिति का पल भर में ही अंदाजा लग गया हो। उसने केली से बचा हुआ कुछ सामान खरीदा।

केली को कुछ शांति मिली। जैसे ही उसका मन शांत हुआ, तुरंत ही उसके पेट ने शिकायत करनी शुरू कर दी। केली ने पूछा, 'मैम! एक गिलास पानी मिलेगा?'

केली को सिर्फ प्यास ही नहीं बल्कि भूख भी लगी थी। लड़की ने पूछा, 'क्या तुम्हें भूख लगी है?'

केली ने कुछ कहा नहीं परंतु उसे जोरदार भूख लग रही थी। उसकी छोटी-छोटी आँखों में बड़े-बड़े आँसू आ गए। लेकिन तुरंत ही उसने खुद को संभाला और कहा, "नहीं मैम! सिर्फ पानी ही चाहिए, मिलेगा?"

लड़की अंदर से एक ग्लास दूध लेकर आई। शांत मन से केली ने दूध पिया और अपने जेब से पैसे निकाल कर पूछा, 'मैम! मुझे दूध के कितने पैसे देने हैं?'

'एक पैसा भी नहीं! भले काम के पैसे थोड़ी लेने चाहिए?' बहुत प्रेमपूर्वक लड़की ने जवाब दिया।

दिल की गहराई से लड़की को धन्यवाद देकर केली वहाँ से चला गया।

कई सालों बाद उस लड़की को किसी भयंकर रोग ने जकड़ लिया। स्थानीय डॉक्टर्स उसकी बीमारी का पता नहीं लगा सके। उसकी तबीयत लगातार बिगड़ती चली गई। अंत में, शहर के सबसे महंगे डॉक्टर को बुलाया गया। उसकी कुशलता के कारण तुरंत बीमारी पकड़ में आ गई। कई दिनों से यातना भुगतती वह लड़की तेज़ी से ठीक हो गई। लेकिन उसके चेहरे पर ठीक होने की खुशी के बजाय हॉस्पिटल के बिल की चिंता थी। उसे लगा कि बाकी की जिंदगी इस बिल का कर्ज़ चुकाने में ही बीत जाएगी। कैसे वह इतने बड़े हॉस्पिटल का इतना बड़ा बिल चुकाएगी?

आखिर वह दिन आ गया जब उसे हॉस्पिटल से छुट्टी मिलने वाली थी। चपरासी बिल का कवर लेकर आया। काँपते हुए हाथों से उसने कवर खोला। बिल पर बड़े लाल अक्षरों में लिखा था, "पुरा भुगतान हो चुका है! वर्षों पहले पिए गए एक गिलास दूध ने सब कुछ चुका दिया है!"

और नीचे हस्ताक्षर थे, डॉ. हॉवर्ड केली! हॉस्पिटल सूपरिन्टेन्डन्ट!

केली के हस्ताक्षर लड़की के आँसुओं से भीग गए!

यह स्टोरी पढ़ने के बाद जिफी ने एक नहीं बल्कि दो टिशू बॉक्स खाली कर दिए हैं। बस, अब हम नेक्स्ट हाइकिंग ट्रिप के लिए गियर्स यानी की सामान तथा जिफी के लिए नए टिशू बॉक्स की शॉपिंग के लिए जा रहे हैं। मैं थोड़ा लेट हूँ। इससे पहले कि हमारा मैनेजर रिज़ो चिढ़ जाए बाइ, फिर मिलेंगे!

ऐसा कभी सोचा है?

"अंश बेटा, मेरा चश्मा कहाँ गया? तुम्हारे बूढ़े दादाजी को बिना चश्मे के कुछ दिखाई नहीं दे रहा है!" मम्मी ने अंश को पकड़ा, "तुमने फिर से दादाजी का चश्मा छुपा दिया? क्या यह तुम्हें शोभा देता है? लाओ चश्मा वापस करो!"

"मम्मी, गुस्सा क्यों होती हो? मैं थोड़ा मज़ाक कर रहा था।"

"ऐसा मज़ाक करता है क्या कोई? अगर तुम्हारे साथ कोई ऐसा मजाक करे तो तुम्हें पसंद आएगा?"

अंश के पास इसका कोई जवाब नहीं था इसलिए वह दादाजी के हाथ में चश्मा देकर भाग गया।

उसने मज़ा लेने का दूसरा प्लान रेडी रखा था। वह रूम में जाकर चुपचाप बैठ गया। तभी बाथरूम से दीदी की आवाज आई, "मम्मी...बॉडी वाश में कुछ गड़बड़ है, यह तो निकल ही नहीं रहा है।" मम्मी ने आकर बॉडी वाश की बॉटल को सूंघा।

"अच्छा, अब पता चला कि शरबत की बॉटल कैसे खाली हो गई?! अब तो अंश मेरे हाथ से मार खाने वाला है..."

लेकिन अंश कहाँ किसी के हाथ आने वाला था?! रविवार को जब पूरा परिवार पिकनिक पर गया तब सबको चकमा देकर कब अंश पिकनिक

स्पॉट से गायब हो गया किसी को पता ही नहीं चला।

हुआ यूँ कि एक शरारती बंदर मम्मी के हाथ से आइस्क्रीम छीनकर पेड़ पर चढ़ गया। यह देखकर अंश को बहुत मज़ा आया, "वाह, क्या डाइव मारी है!"

मम्मी को बंदर से ज्यादा अंश पर गुस्सा आया, "यह तो जानवर है, हम तो इंसान हैं। किसी को परेशान करने में कैसे मज़ा आ सकता है? तुम्हें कोई परेशान करे, तो क्या तुम्हें मज़ा आएगा?"

"मैं जैसा दूसरों के साथ करता हूँ अगर कोई मेरे साथ ऐसा करे तो क्या होगा?!" अंश को ऐसा विचार कभी नहीं आया। अभी तो उसके शरारती दिमाग में यह विचार चल रहा था कि इस आइस्क्रीम का बंदर करेगा क्या? और इसलिए किसी को पता न चले इस तरह वह बंदर के पीछे-पीछे चल पड़ा।

बंदर ने एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाई और अचानक कहीं गायब हो गया। अंश बंदर को ढूँढ़ता उससे पहले ही बंदर ने आकर अंश का चश्मा खींच लिया।

"अरे, क्या कर रहे हो? मेरा चश्मा वापस दो! मुझे चश्मे के बिना सब कुछ धुंधला दिखाई दे रहा है!" अंश चिल्लाया।

लेकिन, बंदर अंश की भाषा समझता क्या? अंश को भी दादाजी की बात कहाँ समझ में आती थी? आज पहली बार उसे दादाजी का दुःख समझ में आया, और अपने द्वारा की गई शरारत पर उसे शर्म आई।

वह अपनी फैमिली को ढूँढ़ने लगा। लेकिन वह जंगल की भूलभूलैया में फँस गया था। आस-पास कोई दिखाई नहीं दे रहा था। अब उसे बहुत डर लगने लगा। अचानक एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज आई।

उसने आवाज की दिशा में देखा तो उसकी ही उम्र का एक लड़का फँसा हुआ था। वह छूटने की कोशिश कर रहा था।

लड़के ने खुद को छुड़ाने के लिए इशारा किया लेकिन अंश उस लड़के के अजीबोगरीब कपड़ों को देख रहा था। तभी वहाँ किसी ने

आकर अंश की बाँह पकड़ी और उस लड़के को छोड़ दिया।

अंश ने देखा कि उसके पीछे जंगली लोगों का झुंड था, “अरे, लेकिन मैंने उसे नहीं फँसाया। मैं तो खुद ही यहाँ फँस गया हूँ। आप सब कौन हो और मुझे कहाँ ले जा रहे हो? प्लीज़, मुझे छोड़ दो” अंश ने विनती की। लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी।

“हुकाका हुका हुका हुका...” सभी एक सूर में बोलने लगे और अंश को एक पेड़ से बाँध दिया। अंश घबरा गया। किसी ने आकर अंश के चेहरे पर एक लेप लगाया और सब अंश के चारों तरफ नाचने लगे।

“यह क्या लगा दिया मेरे चेहरे पर?! अब ये निकलेगा कि नहीं?! मेरी हालत इतनी खराब है और ये लोग मुझे देखकर ऍन्जॉय कर रहे हैं?!”

ऐसा विचार आते ही अंश को याद आया कि उसने भी एक बार दीदी के बॉडी वॉश में सिरप मिक्स कर दिया था और दीदी की हालत देखकर बहुत खुश हुआ था। जब उसे खुद दीदी के समान दुःख का अनुभव हुआ तो उसे बहुत पछतावा हुआ।

अंश विचारों में खोया हुआ था तभी सब लोग अंश को अकेला छोड़कर कहीं चले गए। अंश ने छूटने के बहुत प्रयत्न किए लेकिन उसकी ताकत काम नहीं आई। तभी वह छोटा लड़का चाकू लेकर अंश के पास आया। आस-पास कोई नहीं था। अंश घबरा गया।

उस लड़के ने फटाफट अंश की रस्सी काट दी और उसका हाथ पकड़कर कहा, “चलो, भाग जाओ! मैं तुम्हें निकलने का रास्ता दिखाता हूँ।”

कुछ देर दौड़ने के बाद अंश हाँफने लगा, “एक मिनिट, एक मिनिट... रुको... अब और नहीं दौड़ा जा रहा...”

दोनों थोड़ी देर रुक गए। अंश थोड़ा स्वस्थ हुआ। उसने धीरे से उस लड़के को पूछा, “मैंने छूटने में तुम्हारी मदद नहीं की, फिर भी तुम मेरी मदद क्यों कर रहे हो?”

“क्योंकि मुझे पता है कि फँसने का दुःख क्या होता है...” लड़के ने जवाब दिया।

अंश के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। आज तक वह जानवरों की तरह दूसरों के दुःख में मज़े लेता रहा और आज एक जानवरों के बीच रहने वाले लड़के ने उसे सच्ची मानवता सीखा दी।

अंश ने दूर से अपने मम्मी-पापा को आते हुए देखा। दिल से उस लड़के को धन्यवाद देकर अंश अब वास्तव में सही रास्ते की तरफ मुड़ा।

इसका नाम मानवता!

यदि हमें किसी ने दस हज़ार रुपये दिए हों और हम उसे नहीं लौटाएँ, तो उस समय हमारे मन में विचार आना चाहिए कि 'अगर मैंने किसी को दिए हों और वह मुझे नहीं लौटाए तो मुझे कितना दुःख होगा?! इसलिए जितना जल्दी हो सके उसे लौटा दूँ।'

किसी का कुछ गिरा हुआ मिलते ही उन्हें तुरंत याद आएगा, 'अरे, यदि मेरा गिर गया होता तो मुझे क्या होता? तो फिर किसी और को कितना दुःख होता होगा?' इसलिए जाँच-पड़ताल करके उस व्यक्ति की चीज़ उसे वापिस पहुँचा दें।

किसी ने मुझे गाली दी तो बदले में मैं उसे गाली दूँ उससे पहले मेरे मन में ऐसा हो कि, 'यदि मुझे इतना दुःख होता है तो फिर मैं गाली दूँगा तो उसे कितना दुःख होगा!' ऐसा समझकर वह गाली न देकर निपटारा करता है।

हमारा कोई कुछ चुरा ले तो हमें दुःख होता है, तो किसी का चुराते समय हमें विचार आना चाहिए कि नहीं, किसी को दुःख हो ऐसा कैसे करें! यदि कोई हमसे झूठ बोलता है तो हमें दुःख होता है तो हमें भी किसी के साथ झूठ नहीं बोलना चाहिए।

यदि मैं आपके घर आया तब आप 'आइए, बैठिए' कहें और मुझे अच्छा लगता हो तो मेरे घर पर जब कोई आए तब मुझे भी उसे 'आइए, बैठिए' ऐसा कहना चाहिए, यह मानवता कहलाती है।

न्यू ईयर पार्टी
ओह, क्या हुआ तुम्हें?
मुझे काँच लग गया...
लेकिन टेफी ने जॉली को नहीं, बालु को पूछा था।
मेरे घाव तो किसी को दिखते ही नहीं हैं। अंदर के भी कहाँ दिखते हैं!
जॉली को सब इग्नोर करते थे। रिसेस में गेम्स खेलना हो तो भी कोई जॉली को अपनी टीम में नहीं रखता था।
जब बालु बेर का बर्थडे था तब उसने जॉली को इन्वाइट नहीं किया था। जॉली उस बर्थडे पार्टी की बातें चुपचाप बैठकर सुन रहा था।
बालु के घर पर कितना अच्छा पूल था।
अरे, मुझे तो वहाँ झूला झूलने में मज़ा आया।

तभी सुमी आई,
नोटिस बोर्ड पढ़ा? बालु ने बीच पर न्यू ईयर पार्टी रखी है। सभी इन्वाइटेड हैं!
जॉली के कान खड़े हो गए।
सभी?!! मैं भी!!
और सुना है कि रेन्बो जंगल से बालु का फ्रेन्ड गोल्डी भी इस पार्टी में आने वाला है!
वाउ!! गोल्डी भी? सो कूल...!
जब सभी पार्टी एन्जॉय कर रहे थे तब जॉली नीचे झुककर कुछ उठा रहा था।
किसी का ध्यान जॉली की ओर नहीं था, सिर्फ एक को छोड़कर।
यह क्या कर रहे हो?
देखो ना, बीच पर कितने काँच के टुकड़े हैं। वही उठा रहा हूँ। किसी को लग जाएँ तो?
एक बार मुझे ही काँच लग गया था। बहुत दर्द हुआ था और खून भी निकला था।

चलो, मैं भी हेल्प करता हूँ। मैं गोल्डी, बालु का फ्रेन्ड। क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?
'मेरे दोस्त बनोगे?' ये शब्द तो जॉली ने सिर्फ सपने में ही सुने थे।
हाँ, श्योर। मेरा नाम जॉली है।
तभी बालु पूरी टोली को लेकर वहाँ पहुँचा।
अरे गोल्डी, यह क्या कर रहे हो? चलो, मैं तुम्हें अपने फ्रेन्ड्स से मिलवाता हूँ।

पहले तुम मेरे फ्रेन्ड जॉली से मिलो। ऐसे फ्रेन्ड्स रोज-रोज नहीं मिलते।
पता है, एक दिन जॉली को काँच चुभ गया था। उसे जैसा दर्द हुआ था वैसा तुम सब को न हो इसलिए वह चुपचाप काँच उठा रहा है।
सॉरी जॉली, तुमने हम सबकी इतनी केयर की और हम सबने तुम्हें हमेशा इग्नोर किया।
इट्स ओके!
जॉली, झूले पर बहुत मज़ा आ रहा है! तुम भी मेरे साथ यह मज़ा लेना चाहोगे?!

AALOO CHILLY
चिली आइस्क्रीम... वी लव चि...ली... आइस्क्रीम...
किससे पूछकर तुमने मेरा माइक लिया?
सॉरी, कोको!
कितना अच्छा आइस्क्रीम है!
कोको!! यह तो चिली का आइस्क्रीम है।
सॉरी, देखकर मुझे खाने का मन हो गया।
अरे ! नो सॉरी! मैं दूसरा ले आऊँगा।

चलो खेलें...

सही परछाई ढूंढो।

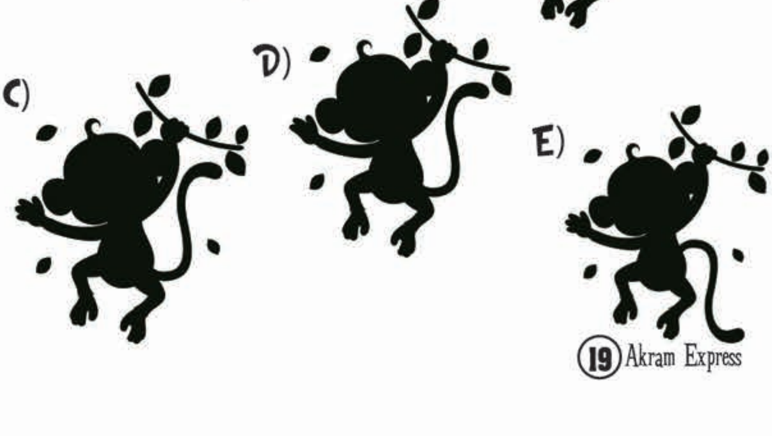

Akram Express

January 2023
Year : 10, Issue :10
Conti. Issue No.: 118

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

चाहे आप यात्रा पर कोई खेल खेलते हों या खेल में यात्रा पर जाते हैं, आप दोनों में मज़ा कर सकते हैं! GNC इस खेल में हमें एक रोमांचक सफ़र पर ले जा रहा है...

Happie Journey

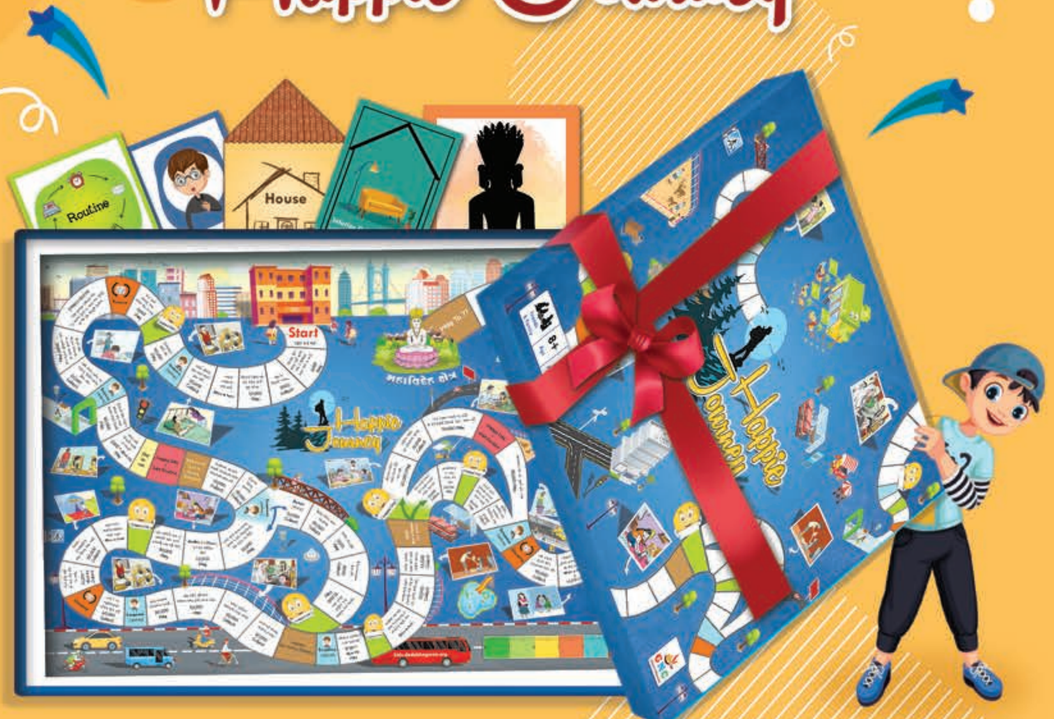

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **Whatsapp** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025